ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 195-197
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

पाश्चात्य एवं भारतीय छापा कला का परिचय

1. अंकिता साहू
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-01.12.2023, Revised-06.12.2023, Accepted-10.12.2023 E-mail: ankitasahu512@gmail.com

सारांशः ***छापाकला के द्वारा ही मनुष्य ने इतिहास को जीवित रखा है, तॉकि वह भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए लाभकारी सिद्व हो सके। छापाकला पश्चिम में परिपक्व होती हुई भारतीय आधुनिक कला में भी महत्वपूर्ण रही है। छापाकला के अनेक उदाहरण गुफाओं, शैलचित्रों, पहाड़ियों, भूखण्डों तथा अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।***

छापाकला एक महत्वपूर्ण विद्या है, जिसकों मशीनों तथा शारीरिक प्रक्रियाओं द्वारा एक ही कृति की अनेकों छापाकृतियॉ प्राप्त कर सकते हैं। इसी कला के द्वारा ही हमारी लिपियों का विकास भी सम्भव हो पाया है। प्रागैतिहासिक कालीन मानव छापाकला का प्रयोग जादू, टोने–टोटके या आखेट को सफल बनाने के लिए उससे पूर्व करता था। छपाई के अनेक संघटक होते हैं और इनका पूर्व से ही कलाकारों को ज्ञान भी है जैसेः– काष्ठ चित्रण विधा, लिनोलियम व ताम्र उत्कीर्णन आदि है। छापाकला का इतिहास श्वेत श्याम से प्रारम्भ होकर रंगीन मुद्रण में विकसित होता हुआ देखा जा सकता है।

कुंजीभूत शब्द– छापाकला, भारतिय आधुनिक कला, शैलचित्रों, काष्ठ चित्रण विधा, लिनोलियम, ताम्र उत्कीर्णन, रंगीन मुद्रण।

छापाकला द्वारा लिपियों का प्रयोग और विकास– पुरातत्वेत्ता डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय के अनुसार "साक्षरता ही प्रागैतिहासिक व इतिहास के मध्य विभाजक रेखा है।'' भाषा और लिखित साक्ष्य से पहले कोई नहीं जानता कि मानव इतिहास कितने युग पुराना है। मानव में अपने विचारों का आदान–प्रदान करने की इच्छा जागी और इसी से सांकेतिक भाषा जन्मी, परन्तु यह मानव सभ्यता के लिए पर्याप्त नहीं थी।

मानव धीरे–धीरे स्तूपों पर स्मृति चिन्ह का निर्माण करने लगा और कुछ समय पश्चात् अपने व्यक्तिगत सम्पत्ति को भी चिन्हित करने लगा। आधुनिक व्यावसायिक चिन्ह (स्वहव) इसी का विकसित रूप है। सर्वप्रथम छपाई लकड़ी के ठप्पों द्वारा की जाती थी, जो चीन और जापान से प्रारम्भ हुई थी।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम मेसोपोटामिया में किलाक्षर लिपि का विकास हुआ जो मिट्टी के तख्ती पर लिखे जाते थे। मिस्त्र में हेरोजिल्पस (Herogilpus) चित्रलिपि का प्रयोग हुआ, जिसका उदाहरण "रोजेटी" शिल्प में देखा गया था। भारत में सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त मोहरों पर चित्रलिपि का प्रयोग देखा गया है।

कागज का अविष्कार– कागज के अविष्कार से पूर्व मानव ताड़पत्र पर पेपीरस, भुर्जछाल व सान्सी छाल पर लिखावट का कार्य करता था। चीन में लगभग 105 ई. में त्साई लुन (Tsai Lun) के द्वारा कागज का अविष्कार किया गया। इस प्रकार कागज बनाने की कला मध्य पूर्व देशों से होते हुए यूरोप तक पहुँची और विभिन्न पुस्तकें कागज पर छापी गयीं। सन् 170 ई. तक चीन में उभरी सतह मुद्रण (रिलीफ प्रिटिंग) का बहुत विकास हो चुका था। जिसका श्रेष्ठ उदाहरण 888 ई. में छापी गई पांडुलिपि – हिरक सूत्र (डायमंड सूत्र) है, जिसमें लिपि के साथ–साथ चित्र भी छापे गये। चलधातु अक्षर मुद्रण का अविष्कार मेंज के "जान गुटिन बर्ग" ने किया था। इस खोज के पश्चात् ही पुस्तकों के प्रकाशन सम्भव हो सका। सर्वप्रथम इस विधि द्वारा "बाइबिल" छापी गयी।

छापाकला के प्रमुख पाश्चात्य कलाकार– काष्ठ छापा कला का सर्वाधिक विकास चित्रांकन के रूप में इटली और जर्मनी से प्रारम्भ होता है। मीशेल वागमट और उसके शिष्य विल्हम प्लेदन वर्क की काष्ठकला प्रारम्भिक छापाकला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। वागमट ने एक महान चित्रकार को हमारे बीच परिचय कराया, जिनका नाम अल्बर्ट ड्यूरर था।

अल्बर्ट ड्यूरर (Albert Durer)– ड्यूरर प्रसिद्व जर्मन चित्रकार प्रिंटमेकर था। इनका जन्म 21 मई 1471 में ड्यूरर ने नुरम्बर्ग में हुआ था। सन् 1495 ई. में ड्यूरर ने नुरम्बर्ग में काष्ठ चित्रों की श्रृंखला तैयार की। प्रारम्भ में काष्ठ चित्र श्वेत श्याम से छापे जाते थे तथा उसके उपरान्त उसमें हाथों से रंग भरा जाता था, परन्तु ड्यूरर ने छापा चित्रों में काष्ठ ठप्पों द्वारा ही रंगीन चित्र बनाने प्रारम्भ कर दिए और हाथ से छापा चित्रों में रंग भरना समाप्त हो गया।

प्रमुख छापा चित्र–

एपोकालिप्स	(काष्ठ चित्र)
द ग्रेट पैशन	(काष्ठ चित्र)
द लाइफ ऑफ वर्जिन	(काष्ठ चित्र)

रेब्रां वन रिज्न (Rembrandt Van Rijn)– रेब्रां एक प्रसिद्व छापाकार थे इन्होंने ऐचिंग माध्यम में लगभग 300 से अधिक कलाकृतियॉ बनायी, रेब्रां प्रोट्रेट के लिए बहुत प्रसिद्व थे। छाया प्रकाश का अत्यधिक सुस्पष्ट रूप रेब्रा अपने व्यक्तिगत जीवन में कभी सुख नहीं भोग सके।

रेब्रां के प्रमुख छाया चित्रों में– रात्रि के प्रहरी, भिखारी, तीन सलीब व क्राइस्ट हीलिगं द सिक

गोया (Goya)– गोया एक बुद्विवादी कलाकार थे, स्पेन में जन्मे गोया एक किसान परिवार के होने के कारण इनका अधिक समय खेतों में बीतता था। इन्होंने अपनी कला की यात्रा का प्रारम्भ दरबारी चित्रकार के रूप में किया था। यह एक चित्रकार, आलोचक और इंग्रेवर भी थे। 1789 ई. में इन्होंने लॉस केप्रीकोस चित्र श्रृंखला ऐचिंग तथा एक्वाटिंट पद्वति तैयार की। इनके प्रमुख छापाचित्रों में "द

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

डिजास्टर ऑफ द गुएरा", "द मूडी" कुछ छापाचित्रों को इन्होंने कल्पना करके बनाया तथा कुछ उनके व्यक्तित्व के खराब समय को दिखाते हैं। जैसे– द स्लीप आफ रीजन प्रोडयुस्स मोन्सहरस

कुछ चित्रों में मानवीयता के भाव दिखाये Because he was sensitive, Love and Death गोया ने अपने छाया चित्रों को जनसाधारण तक पहुँचाया।

पिकासो– घनवाद के प्रमुख कलाकार पिकासो एक चित्रकार, मूर्तिकार तथा छापाकार थे। 1914 ई. में पिकासो ने मेक्स जेक के ग्रंथत्रय की दूसरी पुस्तक के लिए घनवादी शैली में अम्लॉकन विधा में कार्य किया।

पिकासो ने लिथोग्राफ, एक्वाटिंट, ड्राइप्वाइंट, लिनोकट, वुडकट में भी कृतियों का निर्माण किया। सन् 1959 ई. में पिकासो ने एक्वाटिंट माध्यम से वर्सिलोना के गिली के लिए भी छायाचित्र तैयार किया।

छायाकृतियों– नेचुरल हिस्ट्री ऑफ वुफोन (एक्वाटिंट), ए मास्टर ऑफ द मीडियम (लिनोकट), फिशर कम्पोज प्रथम (लियोग्राफ)।

स्वतन्त्र भारत में छापाकारों द्वारा आधुनिक विधियों की खोज– सन् 1953 ई. में कला के क्षेत्र में विकास का काल माना गया है। छापाकला को लेकर कलाकारों की व्यक्तिगत रूचि बढ़ रही थी जिसमें पहला चरण 1954–64 तक दिल्ली में कवंल कृष्ण द्वारा प्रारम्भ किया गया। देश के विभिन्न कला संकाय में छापाकला की प्रमुख कार्यशालाएं, प्रदर्शनी, मेले अपनी अलग पहचान बना रहे थे।

कोलाज छापाचित्र– सन् 1910 ई. में गोन्तगुमरी में जन्मे कवंल कृष्ण ने छापाकला को एक नया आयाम दिया।

इन्होंने ही सर्वप्रथम इटैग्लियो पध्दति पर कोलाज को अम्लांकित प्लेट पर छापा था। कवंल कृष्ण ने पेरिस "ऐतेलिय 17" में अम्लांकन और उत्कीर्णन तकनीकी सीखी। प्रारम्भ में इन्होनें एकरंग छापाचित्र बनाए किन्तु समय के साथ–साथ इन्होंने एक अद्भुत तकनीकी की खोज की। सन् 1957 के बाद कवंल कृष्ण ने धातु की प्लेट को छोड़कर टेक्सचर पेपर को गोंद से छिपकाकर छपाई के लिए एक नया धरातल तैयार किया। अलग–अलग प्रकार के टेक्सचर पेपर सतह को ऊँचा और नीचा बना देते थे। इस प्रकार कोलाज की प्लेट तैयार करके मुलायम रोलर द्वारा प्लेट पर विभिन्न रंग की स्याही लगाकर छापा तैयार कर लेते थे। सन् 1958 के बाद इस प्रक्रिया में बहुत विकास हुआ।

कोलाज छापा द्वारा बनाए कंवल कृष्ण के कुछ चित्र– सेंट मेडिटेटिंग, बर्थ ऑफ लाइट, शिवरिंग सन।

विस्कोसिटी प्रक्रिया– विस्कोसिटी प्रक्रिया द्वारा एक ही प्लेट से बहुरंग छापा लिया जा सकता था। वर्तमान में इस तकनीक के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त छापाकार कृष्णा रेड्डी रहे हैं। कृष्ण रेड्डी का जन्म सन् 1925 ई. में आन्ध्र प्रदेश मे हुआ था। इन्होंने ने भी "ऐटेलिय–17" की कार्यशाला में छापा चित्रण का प्रशिक्षण लिया।

इन्होंने अम्लों के साथ एक नया प्रयोग प्रारम्भ किया और एक तकनीकी का विकास किया जिसको "चिपचिपाहट प्रक्रिया" (विस्कोसिटी) के रूप में जानते हैं। इस प्रक्रिया में एक ही प्लेट द्वारा अधिक रंगों का छापा तैयार किया जा सकता है।

कृष्णा रेड्डी के प्रमुख छापा चित्र– पेस्टोरल, घुटनो के बल चलती अप्पू, मसखरे।

लुगदी छापाचित्रः–सीमेंट और प्लास्टर ब्लॉक तथा कागज की लुगदी के साथ सोमनाथ होर ने एक नयी छापा प्रक्रिया की खोज की। सोमनाथ का जन्म 1921 ई. में बंग्लादेश के चितगॉव में हुआ था। इनकी कला शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से हुई। सोमनाथ होर पर किसी भी पश्चिमी शैली का प्रभाव नहीं था। इन्होंने अपना पूर्ण ध्यान नई तकनीकी विकसित करने में लगाई।

सन् 1858 में सोमनाथ दिल्ली आये। यहॉ पर दिल्ली पॉलीटेक्निक के ललित कला विभाग में ग्राफिक इन्चार्ज का पद सम्भाला। इन्होंने 1973 ई. में लुगदी छापा (पल्प प्रिंट) की प्रदर्शनी दिल्ली में करायी।

पल्प प्रिंट के लिए सबसे पहले समतल सतह की मिट्टी की पटिया लेते हैं उस पर विभिन्न औजारों द्वारा चित्र उकेरा जाता है। इस प्रकार बने सतह से सीमेंट के घोल द्वारा उसका सांचा बनाया जाता है और सांचा सूख जाने पर प्लेट का कार्य करता है। इस प्लेट के ऊपर कागज की लुगदी बिछाई जाती है। अन्त में छापा चित्र प्राप्त किया जाता है।

सोमनाथ होर के किए गये नए परीक्षण में वह जो परिणाम पाना चाहते थे वो पल्प पेपर में प्राप्त किया। पल्प छापा द्वारा बनायी गयी इनकी प्रथम प्रदर्शनी 1973 में दिल्ली में वुड्स या घाव विषय से आयोजित की।

छापाचित्र– घाव (पल्पप्रिंट), नाइट मीटिंग(काष्ठ उत्कीर्ण), जादूगर।

छापा चित्रण की प्रमुख तकनीकी– छापा चित्रों को मुद्रित करने की कुछ प्रक्रिया होती है जो विभिन्न मशीनों द्वारा तथा हाथ से छापे जाते हैं। छापाचित्र ब्लॉक प्लेट, शिला, वुड, रबर की सतह पर उत्कीर्ण करके स्याही द्वारा कागज या अन्य वस्तुओं के धरातल पर छापे जाते हैं।

तकनीकी– उभार सतह उत्कीर्णन प्रक्रिया– (Relief Method) उभार छापा प्रणाली में जो भाग हमें छापना है उसको ऊँचा रखते हैं तथा जो हमे नीचे छापना है उसको गहराई से उत्कीर्ण कर दते हैं। उभरी हुई सतह पर रोलर की सहायता से स्याही लगाते हैं। उसके ऊपर पेपर रखकर एकसमान दबाव डालने पर हमे उभरी हई सतह की प्रतिकृति प्राप्त कर लेते हैं, इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण वुडकट है, काष्ठ उत्कीर्णन।

उभार सतह छापा सिध्दान्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

अन्तः सतह उत्कीर्णन प्रक्रिया–(Intagalio Method)- इस छापा तकनीक में रेखा चित्र किये गये हिस्से को गहराई से उकेरा जाता है। इसमें स्याही का लेप पूरी प्लेट पर लगा दिया जाता है। स्याही उत्कीर्ण किये गये गहरे हिस्से में भर जाती है तत्पश्चात् उसको सतह से साफ कर देते हैं। एक अल्पनम कागज लेकर इस प्लेट पर रखते हैं और नमदे से ढक देते हैं। उसके बाद इस पर समान दबाव डालते हैं। नमदे की सहायता से अल्पनम कागज उत्कीर्णन किए गए गहराई तक पहुंच जाती है और उत्कीर्ण किए गए हिस्से में ठहरी हुई स्याही छप जाती है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण तॉबें की प्लेट है।

1. रेखाचित्र उत्कीर्णन प्रणाली– (i) ताम्र उत्कीर्णन, (ii) स्टिल उत्कीर्णन, (iii) ड्राईप्वाइंट

2. अम्लांकन माध्यम– (i) रेखा अम्लांकन, (ii) साफ्ट ग्राउण्ड, (iii) एक्वाटिंट, (iv) मेजोटिंट, (v) विस्कोसिटी, (vi) कोलोग्राफी चित्रण, (vii) कोलाज छापा चित्र

अतः सतह छापा सिध्दान्त

(स) समतल सतह प्रक्रिया (Planography Method) इस प्रणाली में सतह को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। यह रासायनिक प्रक्रिया द्वारा किया जाता है इसमें चिकनाई और पानी एक दूसरे के विकर्षित रूप होते हैं। लिथोग्राफ में दानेदार शिला का प्रयोग किया जाता है। इसमें मशीनों द्वारा कोई भी परिवर्तन नहीं किया जाता है। शिला पर जैसा कार्य किया गया है उसी प्रकार अच्छा खराब छपता है।

(i) लिथोग्राफ तकनीकी, (ii) सैरीग्राफी माध्यम

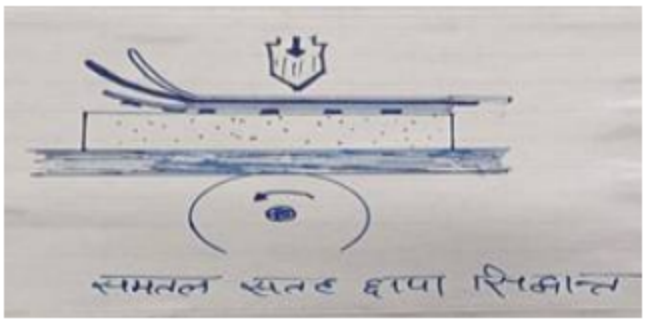

समतल सतह छापा सिध्दान्त

निष्कर्ष– छापाकला का क्षेत्र वृहद है। सस्ते मूल्यों द्वारा छापाकृतियों को राजा रवि वर्मा जैसे महान कालाकरों ने घर घर पहुॅचाया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छापाकला ने अपनी अलग पहचान बनायी इसमें अनेक ललित कला संकाय ने अग्रसर होकर साथ दिया। अनेक मशीनें मुद्रण के लिए बनायी जा रही हैं। सभी विज्ञापनों का भी मुद्रण के द्वारा प्रचार प्रसार सम्भव हो पाया है।

छापा कलाकृतियों की तकनीकी द्वारा ग्राफिक कलाकारों को बहुत लाभ भी हुए हैं और इनका प्रयोग छापाकार अपनी अभिव्यक्तियों द्वारा दिखा रहे हैं। छापा कृतियों के आकार छोटे होने पर हम कृतियों को हर जगह ले जाने में अनुकूल रहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bhartiya chhapachitr kala aadi se adhunik kaal tak, Dr.Sunil Kumar, Bhartiya kala prakashan,New Delhi India.
2. A History of graphic art , James Cleaver.
3. Pashatya kala , Dr. Mamta Chaturvedi.
4. Paragatihasik Bhartiya chitrakala-paschimottar chhetrs ke utkiran chitr- Dr.Jagdish Gupta.
5. Indian print making today,1985.
6. Adhunik Bhartiya kala ka vikas, Vinod Bhardwaj : Adhunik kala kosh.
7. The graphic Art of some Nath Hore :- jaya Appasamy.

*****